शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 मार्च 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

हाईस्कूल के विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता का भाषा उपलब्धि के सन्दर्भ में अध्ययन

*डॉ. मधुलिका वर्मा
**नीरज सिंह
*वरिष्ठ व्याख्याता, शिक्षा अध्ययन शाला
**शोधार्थीः (एम.एड.) शिक्षा अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्व विद्यालय, इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप.

उपयोगी सार्थक तथा नवीन कार्य, नवीनता लिये एवं सोचने-विचारने की प्रक्रिया ही सृजनात्मकता है। सृजनशील व्यक्ति, क्रियाशील, मौलिकता चिन्तन करने वाले, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, निर्णय शक्ति सम्पन्न, अति जिज्ञासु, उच्च बोधगम्यता, कुषल समायोजन, अति संवेदनशील, सौन्दर्यानुभूति, सौन्दर्याभिव्यक्ति आदि गुणों से सम्पन्न होते हैं। प्रस्तुत शोध प्रबंध हेतु मध्यप्रदेश शिक्षा मंडल भोपाल से जुड़े इन्दौर जिले के 5 शासकीय विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। इन विद्यालयों के दो सौ विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 105 छात्र व 95 छात्राएं थीं। भाषा सृजनात्मकता परीक्षण का परीक्षण डॉ.. एस.पी. मल्होत्रा एवं सुचेता कुमारी द्वारा निर्मित है। भाषा उपलब्धि परीक्षण परीक्षण का निर्माण शोधार्थी ने स्वयं किया था। प्रस्तुत शोध कार्य में निष्कर्ष तौर पर पाया गया कि हाईस्कूल विद्यार्थी की भाषा सृजनात्मकता पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है। उच्च एवम निम्न भाषा उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है। उच्च एवं निम्न भाषा उपलब्धि वाले बालक एवं बालिकाओं की भाषा सृजनात्मकता में अंतर नहीं होता है। लिंग एवं भाषा उपलब्धि की अंतः क्रिया का भाषा सृजनात्मकता प्राप्तांकों में कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है। उच्च एवम निम्न भाषा उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है। शहरी छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है। शहरी क्षेत्र के उच्च उपलब्धि वाले छात्रों की भाषा सृजनात्मकता निम्न उपलब्धि वाले छात्रों की तुलना में कम होती है या उच्च उपलब्धि वालों छात्रों की तुलना में निम्न उपलब्धि वाले शहरी छात्र अधिक भाषा सृजनात्मकता लिए हुये हैं। ग्रामीण क्षेत्र के निम्न उपलब्धि वाले छात्रों की भाषा सृजनात्मकता उच्च उपलब्धि वाले छात्रों से निम्न है या विद्यार्थी जिनकी भाषा सृजनात्मकता अधिक है, उनकी उपलब्धि भी अधिक है। जबकि जिनकी भाषा सृजनात्मकता कम है, उनकी उपलब्धि कम है।

प्रस्तावना

सृजनात्मकता का अर्थ वैज्ञानिक कायाकल्प से नहीं है, यह किसी भी क्रिया में पायी जाती है। किसी भी कार्य या व्यवसाय में सृजनात्मकता के दर्शन होते है। सृजन वह अवधारणा है, जिसमें उपलब्ध साधनों से नवीन या अनजानी वस्तु, विचार या धारणा को जन्म दिया जाता है। सृजनात्मकता से अभिप्राय है रचना संबंधी योग्यता, नवीन उत्पाद की रचना।

गिलफोर्ड के अनुसार, ‘‘सृजनात्मकता पाँच तत्वों के गुणात्मक योग का नाम है, ये पाँच तत्व है 1) ग्रहणशीलता (Cognition), 2) केन्द्राभिमुख

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

चिन्तन (Convergent thinking) 3) केन्द्र विमुख चिन्तन (Divergent thinking) 4) स्मृति (Memory) 5) मूल्यांकन (Evaluation)

उपयोगी सार्थक तथा नवीन कार्य, नवीनता लिये एवं सोचने-विचारने की प्रक्रिया ही सृजनात्मकता है। सृजनशील व्यक्ति, क्रियाशील, मौलिकता चिन्तन करने वाले, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, निर्णय शक्ति सम्पन्न, अति जिज्ञासु, उच्च बोधगम्यता, कुशल समायोजन, अति संवेदनशील, सौन्दर्यानुभूति, सौन्दर्याभिव्यक्ति आदि गुणों से सम्पन्न होते है।

सृजनात्मकता तथा भाषा में संबंध

भाषा एवं सृजनात्मकता का बहुत ही घनिष्ट संबंध है। दोनों मिलकर विकास के एक ऐसे पथ पर अग्रसर हो सकते हैं, जिससे मानव के समस्त उद्देश्य, धारणायें अपनी सही दिशा को प्राप्त कर सकते हैं। भाषा की त्रुटियों को सृजनात्मकता के माध्यम से दूर किया जा सकता है तथा उसमें नवीन तत्वों का समावेश भी किया जा सकता है।

सृजनात्मकता का संबंध भाषा एवं भावों से होता है, जो कि हिन्दी भाषा की विभिन्न विधियों में साफ-साफ दिखाई देता है। चिन्तन, मनन, विश्लेषण आदि सभी क्रियायें, इस अपनी भाषा के माध्यम से ही करते है। यदि व्यक्ति सृजनशील है तो भाषा उसमें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि जैसे ही सृजनशील व्यक्ति कुछ नया सृजन करना चाहता है तो भाषा उस सृजन को शब्द प्रदान करती है, और सृजन प्रक्रिया को आगे बढ़ाना प्रारंभ कर देती है। भाषा से ही व्यक्तित्व में निखार आता है। भाषा उसका आईना होती है।

अध्ययन का औचित्य

सम्पूर्ण विश्व संकट के दौर से गुजर रहा है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक समस्यायें बढ़ती जा रही है। मानव प्रेम खत्म हो रहा है। आतंकवाद बढ़ता जा रहा है। पर्यावरण प्रदूषित हो गया है। हम एक बीमारी का इलाज खोजते है तो दूसरी बीमारियाँ पैदा होती जा रही है। हमें अपनी जीवन शैली और जीवन के उद्देश्यों पर दृष्टिपात करने की जरुरत है। कुछ नये एवं अनूठे विचारों की आवश्यकता है, जो संपूर्ण जगत को सद्मार्ग पर ला सके, जिसमें सभी प्राणियों के लिए 'जिओ और जीने दो' की भावना हो। अतः इसमें सृजनात्मकता अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, क्योंकि जब तक अनूठे एवं तर्कपूर्ण विचार हमारे सामने नहीं आते, हमारा नजरिया नहीं बदलता है।

सेकेण्डरी स्कूलों में पढ़ रहे विद्यार्थी किशोरावस्था से गुजर रहे होते हैं। इस समय इनमें शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक विकास की गति तीव्र होती है। ऐसे में यदि विद्यार्थी की सृजनशीलता को उचित दिशा एवं शिक्षा प्रदान कर दी जाय तो वह निश्चित ही समाज के लिए उपयोगी बन सकता है। भाषा सृजनात्मकता का भाषा उपलब्धि कौशल पर शोध शोधार्थी को अध्ययन के दौरान प्राप्त नहीं हुए है। अतः शोधार्थी ने अपने लघु शोध प्रबंध शीर्षक 'हाईस्कूल के विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता का भाषा उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन' का लिया है।

उद्देश्य

ISSN 2320 – 0871
17 मार्च 2015

1 हाई स्कूल विद्यार्थियों के लिंग, भाषा उपलब्धि एवं उनके अंतःक्रिया का भाषा सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

2 हाई स्कूल विद्यार्थियों के रहवासी क्षेत्र, भाषा उपलब्धि एवं उनके अंतःक्रिया का भाषा सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1 हाई स्कूल विद्यार्थियों के लिंग, भाषा उपलब्धि एवं उनके अंतःक्रिया का कोई भी सार्थक प्रभाव भाषा सृजनात्मकता पर नहीं होगा।

2 हाई स्कूल विद्यार्थियों के रहवासी क्षेत्र भाषा उपलब्धि एवं उनके अंतःक्रिया का कोई भी सार्थक प्रभाव भाषा सृजनात्मकता पर नहीं होगा।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध प्रबंध हेतु मध्यप्रदेश शिक्षा मंडल भोपाल से जुड़े इन्दौर जिले के 5 शासकीय विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। इन विद्यालयों के दो सौ विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 105 छात्र व 95 छात्राएं थीं। ये विद्यालय इन्दौर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित थे। ये विद्यार्थी विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के थे जो कि हिन्दी भाषा बोल, लिख, समझ सकते थे। इनकी उम्र 15 से 17 वर्ष के मध्य थी।

उपकरण

भाषा सृजनात्मकता परीक्षणः- यह परीक्षण डॉ. एस.पी. मल्होत्रा एवं सुचेता कुमारी द्वारा निर्मित है। यह परीक्षण मिडिल से लेकर स्नातक स्तर तक के विद्यार्थियों के लिए था। इस परीक्षण में 27 पद थे। इन पदों को 5 उप-परीक्षणों में बांटा गया था जो कि 1) कथा वस्तु का निर्माण, 2) संवाद लेखन, 3) कविता का निर्माण, 4) वर्णात्मक शैली, 5) शब्दावली थे। इस परीक्षण को पूर्ण करने में लगने वाला अधिकतम समय 147 मिनट था। विश्वसनीयता परीक्षण पुनः परीक्षण सहसंबंध गुणांक 0.63 से 0.68 वैधता व बुद्धि परीक्षण के साथ 0.29 से 0.39 तक था। इस परीक्षण का निर्माण सन् 1989 में हुआ था।

भाषा उपलब्धि परीक्षण

इसके परीक्षण के लिए इस परीक्षण का निर्माण शोधार्थी ने स्वयं किया था। यह परीक्षण कक्षा 9वीं स्तर की मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल भोपाल द्वारा प्रतिपादित पाठयचर्या के आधार पर व्याकरण में उपलब्धि पर आधारित था। इस परीक्षण में प्रश्नों की कुल संख्या 25 और लगने वाला समय 40 मिनट था जबकि पूर्णांक 50 था।

प्रदत्तों का संकलन

नियोजन : शोधकर्ता द्वारा सर्वप्रथम 5 शासकीय विद्यालयों को चुनकर संबंधित विद्यालय के प्राचार्यों से सम्पर्क किया गया। विद्यालय के प्राचार्य को शोध की समस्या से अवगत कराया गया। भाषा सृजनात्मकता एवं भाषा उपलब्धी के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई साथ ही शोध के उद्देश्यों एवं उपयोगिता से अवगत कराया गया। तत्पश्चात कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों पर पहले दिन भाषा उपलब्धि तथा दूसरे दिन भाषा सृजनात्मकता परीक्षण को प्रशासित करने की अनुमति ली गई। फिर आवश्यक निर्देशों को दे करके परीक्षणों को प्रशासित किया गया।

परिणाम विवेचना चर्चा एवं निष्कर्ष

विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता पर लिंग, भाषा उपलब्धी एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभावों का अध्ययन-

प्रस्तुत शोध कार्य का प्रथम उद्देश्य यह था- ''विद्यार्थीयों की भाषा सृजनात्मकता पर लिंग, भाषा उपलब्धि एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभावों का अध्ययन करना''। इससे संबंधित प्रदत्तों का विश्लेषण द्विमार्गीय ANOVA द्वारा किया गया। प्राप्त परिणाम सारिणी 1 में दिये गये हैं।

सारिणी1 भाषा सृजनात्मकता के संदर्भ में द्विमार्गीय ANOVA का सारांश

स्रोत	ss	Df	Mss	F
लिंग	4856.697	1	405,669	1.884
भाषा उपलब्धि	11.88	1	11.18	.003
लिंग भाषा उपलब्धि	10.882	1	10.88	.003

व्याख्या एवं चर्चा

सारिणी 1 से स्पष्ट है कि लिंग के लिए F का मान 1.88 जो df=1/197 है जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक नहीं है अतः इस स्थिति में शून्य परिकल्पना 'हाईस्कूल विद्यार्थी की भाषा सृजनात्मकता पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है' निरस्त नहीं की जाती है अर्थात बालिका एवं बालकों की भाषा सृजनात्मकता प्राप्त को में कोई सार्थक अंतर नहीं है अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि बालिका एवं बालकों की भाषा सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं है।

चर्चाः- प्रस्तुत शोध कार्य में निष्कर्ष तौर पर बालक एवं बालिकाओं में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है इसका कारण हो सकता है कि सृजनात्मक एक क्षमता है जो सभी प्राणियों में पायी जाती है। भाषा सृजनात्मकता एक स्वतंत्र चर में रूप में कार्य करता है। व्यक्ति स्त्री हो या पुरूष लेकिन उसमें मानवीय गुण होते हैं, जिसे कि ईश्वर ने रचा है। अतः इस कारण से बालिका एवं बालकों की भाषा सृजनात्मकता में अंतर नहीं पाया गया।

सारिणी क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि भाषा उपलब्धि के लिये F का मान 0.003 है जो df=1/197 है जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है अतः इस स्थिति में शून्य परिकल्पना 'हाईस्कूल विद्यार्थी की भाषा सृजनात्मकता पर भाषा उपलब्धि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है' निरस्त नहीं की जाती है अर्थात भाषा उपलब्धि का बालकों की भाषा सृजनात्मकता प्राप्तांको पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है। अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि उच्च एवम निम्न भाषा उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

चर्चाः-प्रस्तुत शोध कार्य में निष्कर्ष तौर पर भाषा उपलब्धि का भाषा सृजनात्मकता पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसका कारण हो सकता है कि भाषा उपलब्धि का उच्च एवं निम्न होना चिंतन पर आधारित होता है। परीक्षण के अधिकांश प्रश्नों के उत्तर एक निर्धारित प्रारूप एवं तरीके से ही दिये जाते हैं अर्थात् यह एकदिशीय चिंतन पर आधारित है जबकि भाषा सृजनात्मकता बालक की प्रवाहिता,

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल
ISSN 2320 – 0871
17 मार्च 2015

मौलिकता, लचीलापन एवं व्याख्यात्मकता पर आधारित होता है अर्थात् यह बहुदिश चिंतन है। इस प्रकार भाषा उपलब्धि एवं भाषा सृजनात्मकता अलग-अलग प्रकार के चिंतन पर आधारित है इसी कारण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ होगा।

सारिणी क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि लिंग एवं भाषा उपलब्धि की अंत: क्रिया के लिए F का मान .003 जो df=1/197 है जो सार्थकता के स्तर .05 पर सार्थक नहीं है अतः इस स्थिति में शून्य परिकल्पना 'विद्यार्थी की भाषा सृजनात्मकता पर लिंग एवं भाषा उपलब्धि की अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है' निरस्त नहीं की जा सकती है अर्थात लिंग एवं भाषा उपलब्धि की अंतः क्रिया का भाषा सृजनात्मकता प्राप्तांकों में कोई सार्थक प्रभाव नहीं है अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि उच्च एवं निम्न भाषा उपलब्धि वाले बालक एवं बालिकाओं की भाषा सृजनात्मकता में अंतर नहीं है।

चर्चाः- प्रस्तुत शोध कार्य में निष्कर्ष के तौर पर लिंग एवं भाषा उपलब्धि की अंतःक्रिया का भाषा सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इस निष्कर्ष का कारण हो सकता है कि लिंग एवं भाषा सृजनात्मकता स्वतंत्र चर है। लिंग हमारे व्यक्तिव से संबंधित है व उपलब्धि हमारे संज्ञानात्मक पक्ष से, दोनों में कोई सह संबंध नहीं है। दोनों मानव की अलग-अलग क्षमतायें हैं। अतः इन दोनों की अंत: क्रिया का प्रभाव भाषा सृजनात्मकता पर नहीं पाया गया।

2 विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता पर रहवासी क्षेत्र , भाषा उपलब्धि एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभावों का अध्ययनः- प्रस्तुत शोध कार्य का द्वितीय उद्देश्य 'विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता पर रहवासी क्षेत्र, भाषा उपलब्धि एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभावों का अध्ययन करना' था। इससे संबंधित प्रदत्तों का विश्लेषण द्विमार्गीय ANOVA द्वारा किया गया। प्राप्त परिणाम सारणी 2 में दिए गए है।

सारिणी 2 भाषा सृजनात्मकता के संदर्भ में द्विमार्गीय ANOVA का सारांश

स्रोत	SS	Df	mss	F
भाषा उपलब्धि	821.38	1	821.38	0.22
रहवासी क्षेत्र	162.74	1	162.74	0.04
भाषा उपलब्धि, रहवासी क्षेत्र	22100.609	1	22100.60	5.983*

सारिणी क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि भाषा उपलब्धि के लिए F का मान 0.22 है जो df=1/197 है जो कि सार्थकता के स्तर .05 पर सार्थक नहीं है। अतः इस स्थिति में शून्य परिकल्पना 'हाईस्कूल विद्यार्थी की भाषा सृजनात्मकता पर भाषा उपलब्धि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है' निरस्त नहीं की जाती है अर्थात भाषा उपलब्धि का बालकों की भाषा सृजनात्मकता प्राप्तांकों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि उच्च एवम निम्न भाषा उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

चर्चाः- इस निष्कर्ष से संबंधित कारणों की चर्चा पूर्व में की जा चुकी है।

सारिणी क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि रहवासी क्षेत्र के लिए F का मान 0.04 है जो df=1/197 है, जो

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

कि सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक नहीं है अतः इस स्थिति में शून्य परिकल्पना ‘विद्यार्थियों के रहवासी क्षेत्र का, भाषा सृजनात्मकता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है’ निरस्त नहीं की जा सकती है अर्थात रहवासी क्षेत्र का भाषा सृजनात्मकता प्राप्तांको में कोई सार्थक प्रभाव नहीं है अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि शहरी छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

चर्चाः- प्रस्तुत शोध कार्य में निष्कर्ष तौर पर पाया गया कि शहरी छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की भाषा सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है। इसका कारण यह हो सकता है कि रहवासी क्षेत्र एक परिस्थिति है जो व्यक्ति अपनी व अपने परिवार की सुविधाओं एवं आवश्यकता अनुसार चयन करता है यह उसके समाज व संस्कृति से भी प्रेरित हो सकती है जबकि भाषा सृजनात्मकता एक व्यक्तिगत क्षमता है जो परिस्थितियों से परे होती है।

सारिणी क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि भाषा उपलब्धि एवं रहवासी क्षेत्र के मध्य अंतःक्रिया 5.983 है जो कि 0.05 स्तर पर df=1/197 .05 स्तर पर सार्थक है यह दर्शाता है कि भाषा उपलब्धि एंव रहवासी क्षेत्र का भाषा सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है इसी सन्दर्भ में शून्य परिकल्पना ‘भाषा उपलब्धि एवं रहवासी क्षेत्र की अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव भाषा सृजनात्मकता पर नहीं होगा’ को निरस्त किया जाता है अतः निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते है कि भाषा उपलब्धि एवं रहवासी क्षेत्र की अंतः क्रिया का भाषा सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पडता है। भाषा सृजनात्मकता पर भाषा उपलब्धि एवं रहवासी क्षेत्र की अंतःक्रिया प्रभावों का चलन जानने हेतु ग्राफ का निर्माण किया गया है। जो इस प्रकार है

ग्राफ 1 भाषा उपलब्धि एवं रहवासी क्षेत्र की अंत क्रिया का प्रभाव

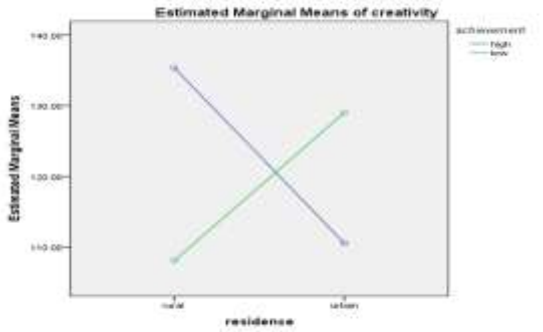

ग्राफ 1 से प्रतीत होता है कि शहरी क्षेत्र के उच्चउपलब्धि वाले छात्रों की भाषा सृजनात्मकता निम्न उपलब्धि वाले छात्रों की तुलना में कम होती है या हम कह सकते है कि उच्च उपलब्धि वालों छात्रों की तुलना में निम्न उपलब्धि वाले शहरी छात्र अधिक भाषा सृजनात्मकता लिए हुये हैं।

निष्कर्ष के निम्न लिखित कारण हो सकते है।

1 निम्न उपलब्धि वाले छात्र अधिक सृजनात्मक इसीलिए रहते हैं क्योंकि वे किसी भी विषय पर ज्यादा विस्तार से वर्णन करते है वे कई दिशाओं में किसी विषय पर वर्णन करते हैं उसमें मौलिकता का प्रयोग करते है यह कार्य तो सृजनात्मकता के लिए ठीक है लेकिन इनके इस विस्तार करने की आदत उन्हें भाषा उपलब्धि में निम्न अंक हासिल करवाती है, ज्यादा विस्तार से वर्णन करने के कारण सारे प्रश्नों को हल नहीं कर पाते और भाषा में निम्न उपलब्धि प्राप्त करते है।

2 दूसरी तरफ उच्च उपलब्धि वाले छात्र विषय की मांग के अनुसार सही सटीक और संतुलित

शब्द-ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल
ISSN 2320 – 0871
17 मार्च 2015

अन्तर देते हैं इसीलिए वे सारे प्रश्नों को हल कर पाते हैं जिससे उनकी भाषा उपलब्धि उच्च होती है, लेकिन उनकी ये आदत या क्षमता सृजनात्मकता के लिए घातक साबित होती है क्योंकि उसमें मौलिकता और विस्तारण की आवश्यकता होती है। ग्राफ 1 से विदित होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के निम्न उपलब्धि वाले छात्रों की भाषा सृजनात्मकता भी उच्च उपलब्धि वाले छात्रों से निम्न है या वह सकते है कि ऐसे विद्यार्थी जिसकी भाषा सृजनात्मकता अधिक है उनकी उपलब्धि भी अधिक है जबकि जिनकी भाषा सृजनात्मकता कम है जिनकी उपलब्धि भी कम है इसके निम्न कारण हो सकते है।

ग्राफ 1 से विदित होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के निम्न उपलब्धि वाले छात्रों की भाषा सृजनात्मकता उच्च उपलब्धि वाले छात्रों से निम्न है या कह सकते है कि ऐसे विद्यार्थी जिनकी भाषा सृजनात्मकता अधिक है, उनकी उपलब्धि भी अधिक है, जबकि जिनकी भाषा सृजनात्मकता कम है, उनकी उपलब्धि कम है। इसका कारण हो सकता है निम्न उपलब्धि वाले ग्रामीण विद्यार्थियों का ज्ञान सीमित होगा। उन्हें देश दुनिया के बारे में बहुत अधिक जानकारी नहीं होगी है जबकि सृजनात्मकता के लिए इसका होना जरूरी होता है तभी वह उचित तर्क, विर्तक, प्रवाहिता, मौलिकता पूर्वक चिंतन कर सकता है अतः इससे भी भाषा सृजनात्मकता का प्राप्तांक प्रभावित हुए होगे।

दूसरी तरफ उच्च भाषा उपलब्धि वाले ग्रामीण छात्रों की भाषा सृजनात्मकता उच्च है क्योंकि उनकी भाषा पर पकड होगी वे अपने विचारों को विभिन्न आयामों में प्रवाहिता, मौलिकता के साथ व्यक्त करने में सक्षम होंगे। अतः कह सकते हैं कि प्रस्तुत निष्कर्ष उपर्युक्त कारणों से प्राप्त हुआ होगा।

निहितार्थ

प्रस्तुत शोध निम्न प्रकार से शिक्षको के लिए उपयोगी हो सकता है।

1 लिंग का प्रभाव, भाषा सृजनात्मकता पर नहीं पड़ता है अतः शिक्षकों को बगैर इसका ध्यान दिये समान रूप से विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देना चाहिए।

2 भाषा उपलब्धि का भी प्रभाव भाषा सृजनात्मकता पर नहीं पाया गया है अतः शिक्षकों को चाहिए कि वे भाषा में कमजोर एवं उच्च उपलब्धि वाले विद्यार्थियों पर समान ध्यान दे।

3 रहवासी क्षेत्र का भी सार्थक प्रभाव भाषा सृजनात्मकता पर नहीं पड़ता है अर्थात शिक्षक को चाहिए कि बगैर इसका ध्यान दिये छात्रों की भाषा सृजनात्मकता को निखारने का प्रयास करें।

4 रहवासी क्षेत्र एवं भाषा उपलब्धि की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव भाषा सृजनात्मकता पर पाया गया है अतः शिक्षकों को चाहिए कि वे छात्रों को बतायें कि किस प्रकार से वे अपनी भाषा पर संतुलन बनाकर अपनी सृजनात्मकता को संतुलित कर सकते है। शहरी छात्रों में उच्च भाषा उपलब्धि वाले निम्न सृजनात्मकता थे और निम्न उपलब्धि वाले उच्च सृजनात्मकता थे अतः वे कैसे अपने आप को संतुलित करें जबकि ग्रामीण क्षेत्र के निम्न भाषा उपलब्धि वाले निम्न सृजनात्मक तथा उच्च उपलब्धि वाले उच्च सृजनात्मक थे अतः शिक्षक को निम्न वाले सृजनात्मक छात्रों को अधिक सृजनात्मक बनाने के प्रयास करने चाहिए

शिक्षक समाज का निर्माणकर्ता कहा जाता है। शिक्षक यदि छात्र की ढंग से परवरिश करे तो देश के लिए महत्वपूर्ण नागरिक तैयार कर सकता है, अतः शिक्षकों को चाहिए भाषा सृजनात्मकता जैसी अमूल्य निधि को छात्रों में है तो उसे उचित एवं लाभदायक बनाने हेतु भरपूर परिश्रम करें।

प्रस्तुत शोध विद्यार्थियों के लिए बहुत ही लाभदायक को सकता है जो निम्न प्रकार से हैः-

1 विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपनी रहवासी क्षेत्र को भी सोचकर परेशान नहीं होना चाहिए क्योंकि शोध परिणाम से स्पष्ट है कि रहवासी क्षेत्र का प्रभाव भी सृजनात्मकता पर नहीं होता है।

2 भाषा उपलब्धि की चिंता किए बिना विद्यार्थियों को स्वतंत्र होकर उचित प्रयासों के माध्यम से अपनी भाषा सृजनात्मता को बढ़ाना चाहिए।

प्रस्तुत शोध अभिभावकों के लिए उपयोगी हो सकता है इसकी उपयोगिता निम्न प्रकार से है।

1.अभिभावकों को चाहिए कि यदि उनका बच्चा भाषा सृजनात्मकता का गुण रखता है तो उसे विकसित करने का उचित मंच प्रदान करें। उनकी उपलब्धि की चिंता किए बिना।

यदि बच्चा या विद्यार्थी कम भाषा उपलब्धि प्राप्त करता है तो उसे कमजोर न समझे क्योंकि भाषा उपलब्धि का सार्थक प्रभाव भाषा सृजनात्मकता पर नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ

1 पाठक, पी.डी. (2010), शिक्षा -मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशंस, आगरा, (उत्तरप्रदेश)

2 शर्मा, आर. (2008): अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा

3 आर.. सैयद (1981): माता-पिता के व्यवहार का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर प्रभाव, एम.एड. लघु शोध प्रबंध, शिक्षा अध्ययनशाला, इन्दौर (म.प्र.)

4 बावेजा, एस. (1979): किशोरावस्था के विद्यार्थियों की साहित्यिक सृजनात्मकता का व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन, एम.एड, लघु शोध प्रबंध, शिक्षा अध्ययनशाला, इन्दौर (म.प्र.)